राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान,
उत्तराखण्ड
National Institute of Technology,
Uttarakhand

Media Coverage

November 2022

चिन्यालीसौड़ में कॉलेज में प्राचार्य प्रो. प्रभात द्विवेदी ने कहा कि भारतरत्न पटेल ने आजादी के बाद भारत को जोड़ने का काम किया।

श्रीनगर में राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईटी) उत्तराखंड के निदेशक प्रो. ललित कुमार अवस्थी ने सरदार बल्लभ भाई पटेल के जीवन पर आधारित प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। बिड़ला परिसर से रन फॉर यूनिटी को प्रति कुलपति प्रो. आरसी भट्ट व अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो. एमएस नेगी ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।

रुद्रप्रयाग में जिलाधिकारी मयूर दीक्षित ने सरदार पटेल के चित्र पर पुष्प अर्पित किए। पुलिस लाइन रतूड़ा में पुलिस अधीक्षक आयुष अग्रवाल ने सरदार पटेल को श्रद्धांजलि दी।

निजता और डाटा सुरक्षा की छात्रों को दी जानकारी

संवाद न्यूज एजेंसी

एनआईटी में साइबर सिक्योरिटी पर हुआ व्याख्यान

श्रीनगर। राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईटी) उत्तराखंड के कंप्यूटर साइंस एंड इंजीनियरिंग विभाग में साइबर सिक्योरिटी विषय पर व्याख्यान हुआ।

आईआईटी गोवा और दिल्ली के विजिटिंग प्रोफेसर ने छात्रों को व्यक्तिगत निजता और डाटा सुरक्षा के बारे में जानकारी दी।

कार्यक्रम का उद्घाटन संस्थान के निदेशक प्रो. ललित कुमार अवस्थी ने किया। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री के डिजिटल इंडिया अभियान ने तकनीक को स्वास्थ्य, शिक्षा, राष्ट्रीय सुरक्षा व परिवहन जैसे क्षेत्रों में अधिक सुलभ बनाया है। वर्तमान समय में देश का सामान्य नागरिक भी अपने दैनिक जीवन में गूगल पे, पेटीएम और इसी तरह के अन्य पेमेंट गेटवे का उपयोग कर रहा है। आईआईटी गोवा के डिपार्टमेंट ऑफ मैथमेटिक्स एंड कंप्यूटर साइंसेज विजिटिंग प्रोफेसर रवि मित्तल ने साइबर सुरक्षा और अपराध पर चर्चा की। उन्होंने कुछ सामान्य साइबर खतरों के बारे में बताया जो समय पर नियंत्रित नहीं होने पर समस्याग्रस्त हो सकते हैं। इस मौके पर प्रभारी कुलसचिव डॉ. धर्मेंद्र त्रिपाठी, डॉ हरिहरन मुथुसामी, डॉ. जीएस बरार व डॉ. कमल कुमार आदि मौजूद थे।

कृषि से अर्थव्यवस्था बढ़ाने पर जोर

श्रीनगर। राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईटी) में कृषि-खाद्य आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन (एग्री-फूड सप्लाई चेन मैनेजमेंट) विषय पर संकाय विकास कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि निदेशक प्रो. ललित कुमार अवस्थी ने कहा कि भारत में कृषि आधारित अर्थव्यवस्था है। विशिष्ट अतिथि एनआईटी हमीरपुर की डॉ. पमिता अवस्थी ने कहा कि यदि किसी राष्ट्र का कृषि क्षेत्र मजबूत है तो वह मुश्किल हालात में भी खड़ा रह सकता है। उन्होंने राष्ट्रीय कृषि विकास योजना पर चर्चा की। संवाद

एनआईटी की हुई स्थापना और केंद्रीय विश्वविद्यालय मिला

300 एकड़ जमीन है एनआईटी के पास

1973 में हुई थी गढ़वाल विवि की स्थापना

पौड़ी जिले के श्रीनगर के सुमाड़ी में हुई राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईटी) की स्थापना हुई। संस्थान में वर्ष 2010-11 में पहला बैच शुरू हुआ। इसके लिए 300 एकड़ भूमि उपलब्ध है। इसमें पहले चरण में 60 एकड़ में एडम ब्लॉक और 1260 छात्र-छात्राओं के लिए परिसर का निर्माण किया जा रहा है।

इसी साल 15 जनवरी को गढ़वाल विश्वविद्यालय बना केंद्रीय विश्वविद्यालय। हेमवंती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय की स्थापना 23 नवंबर 1973 हुई थी। ये विश्वविद्यालय उत्तराखंड के सबसे प्रमुख शिक्षण संस्थानों में से एक है।

स्टार्टअप को बढ़ावा देना व्यापक हित में

जागरण संवाददाता, श्रीनगर गढ़वाल : कृषि क्षेत्र मजबूत होने से राष्ट्र मुश्किल हालात में भी मजबूती से खड़ा रह सकता है। कृषि और उससे संबंधित क्षेत्र में स्टार्टअप को बढ़ावा देना समाज के व्यापक हित में भी है। सरकार इसके लिए पांच लाख रुपये से लेकर 25 लाख तक की वित्तीय सहायता भी प्रदान कर रही है। राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान उत्तराखंड श्रीनगर में फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम के तहत कृषि-खाद्य आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन विषय पर आयोजित कार्यशाला को संबोधित करते हुए एनआइटी हमीरपुर हिमाचल की रसायन विज्ञान विभाग की अध्यक्ष डा. पमिता अवस्थी ने यह विचार व्यक्त किए। कृषि क्षेत्र में हो रहे नवाचारों के साथ ही सुव्यवस्थित खेती, छोटे किसानों के लिए यंत्रीकरण, आपूर्ति श्रृंखला का प्रबंधन को लेकर भी उन्होंने विस्तार से अवगत कराया। इस कार्यशाला का संचालन आनलाइन और आफलाइन दोनों माध्यमों से किया जा रहा है।

एनआइटी उत्तराखंड श्रीनगर परिवार की ओर से एनआइटी हमीरपुर हिमाचल की विभागाध्यक्ष डा. पमिता अवस्थी का स्वागत अभिनंदन करते फैकल्टी ● जागरण

एनआइटी उत्तराखंड श्रीनगर के सभागार में आयोजित कार्यशाला की अध्यक्षता करते हुए एनआइटी श्रीनगर के निदेशक प्रो. ललित कुमार अवस्थी ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की ओर से कृषि क्षेत्र के प्रोत्साहन को लेकर कई जनकल्याणकारी योजनाओं की शुरुआत की गई है। इसमें किसानों की आय दोगुनी करने की प्रतिबद्धता के साथ ही एग्रीकल्चर, इन्फ्रास्ट्रक्चर फंड का निर्माण और प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना आदि प्रमुख रूप से शामिल हैं।

उन्होंने कहा कि फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम का मूल उद्देश्य विभिन्न ज्वलंत मुद्दों पर चर्चा कर एक दिशा देने का है। यह प्रोग्राम शिक्षाविदों, विज्ञानियों और उपभोक्ताओं को भारत में स्थायी खाद्य आपूर्ति श्रृंखला के प्रबंधन और जलवायु परिवर्तन से मुकाबला करने जैसे मुद्दों पर भी चर्चा कर जागरूकता लाने के साथ ही निर्णय लेने में सक्षम भी बनाता है। व्याख्यान सत्र के दौरान इंटरेक्शन सेशन भी आयोजित किया गया। इसमें कृषि और खाद्य श्रृंखला क्षेत्र में सरकारी योजनाओं और नीतियों पर संवाद किया गया। प्रोग्राम संयोजक डा. कमल कुमार ने इंटरेक्शन सेशन का विवरण प्रस्तुत किया।

एनआईटी श्रीनगर में 170 छात्रों ने लिया दाखिला

15 से शुरू होंगी नए शैक्षणिक सत्र की कक्षाएं

संवाद न्यूज एजेंसी

श्रीनगर। एनआईटी (राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान) उत्तराखंड में बीटेक पाठ्यक्रम में 170 छात्रों ने प्रवेश ले लिया है। सभी छात्रों ने संस्थान में रिपोर्टिंग दे दी है। 15 नवंबर से नए शैक्षणिक सत्र की कक्षाएं शुरू हो जाएगी।

एनआईटी उत्तराखंड में बीटेक के पांच पाठ्यक्रम (सिविल इंजीनियरिंग, मेकेनिकल इंजीनियरिंग, इलेक्ट्रीकल, इलेक्ट्रॉनिक्स और कंप्यूटर साइंस एंड इंजीनियरिंग) संचालित हो रहे हैं। पूर्व में प्रत्येक पाठ्यक्रम में 60 सीट के हिसाब से कुल 300 सीट निर्धारित थी लेकिन जगह की कमी की वजह से सीटें घटा दी गई। इस सत्र में कुल 180 सीटों में प्रवेश के लिए काउंसिलिंग हुई। इनमें 50 प्रतिशत सीट राज्य कोटे के तहत उत्तराखंड के छात्रों के लिए आरक्षित थी।

एनआईटी के निदेशक प्रो. ललित कुमार अवस्थी ने बताया कि जोसा (संयुक्त सीट आवंटन प्राधिकरण) से संस्थान को बीटेक प्रथम वर्ष में 177 सीटों का आवंटन हुआ था। प्रवेश के लिए जोसा के माध्यम से 23 सितंबर से 17 अक्तूबर तक छह राउंड की सामान्य काउंसिलिंग चली। इसके बाद 31 अक्तूबर से नौ नवंबर तक सीसैब (केंद्रीय सीट आवंटन बोर्ड) के माध्यम से स्पॉट राउंड चला। पूरी प्रक्रिया में 170 छात्र-छात्राओं ने प्रवेश लिया। उन्होंने बताया कि छात्र-छात्राओं ने भौतिक रूप से संस्थान में उपस्थिति दर्ज कराई। छात्रावास की व्यवस्था कर ली गई है। फिलहाल नव प्रवेशी छात्रों को व्यक्तित्व विकास का प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

प्रवेश की स्थिति

विषय	कुल सीट	प्रवेश
कंप्यूटर साइंस	36	36
इलेक्ट्रॉनिक्स	36	35
इलेक्ट्रीकल	36	34
सिविल	36	33
मैकेनिकल	36	32

नई शिक्षा नीति से भारत बनेगा विश्व गुरु : प्रो. अवस्थी

जागरण संवाददाता, श्रीनगर गढ़वाल : एनआइटी उत्तराखंड श्रीनगर में देश के पहले शिक्षामंत्री भारत रत्न मौलाना अबुल कलाम आजाद की जयंती को राष्ट्रीय शिक्षक दिवस के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर आयोजित व्याख्यान माला की शुरुआत करते हुए एनआइटी निदेशक प्रो. ललित कुमार अवस्थी ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के प्रयासों से नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के माध्यम से भारत पुनः विश्व गुरु बनेगा।

प्रो. ललित अवस्थी ने कहा कि शिक्षा के क्षेत्र में प्रगति हुई है, लेकिन अभी बहुत कुछ हासिल करना बाकी है। जिसे लेकर ही प्रधानमंत्री मोदी की अगुआई में नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू हुई। उन्होंने कहा कि बहुविषयक शिक्षा, विषयों का लचीलापन, क्रेडिट का हस्तांतरण, अकादमिक बैंक का निर्माण सहित अन्य कई महत्वपूर्ण तथ्य हैं, जिनका समावेश नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में हुआ है।

उन्होंने कहा कि एनआइटी की ओर से गुरुकुल कार्यक्रम भी चलाया जाएगा, जिसमें एनआइटी के छात्र आसपास क्षेत्रों के वंचित छात्रों को शिक्षा प्रदान करेंगे।

इस कार्ययोजना के लिए उन्होंने एनआइटी के डीन स्टूडेंट वेलफेयर को निर्देश भी दिए। उन्होंने कहा कि राज्य के फिजिक्स, केमिस्ट्री और गणित के विद्यालयी शिक्षकों को प्रशिक्षित करने के लिए भी एनआइटी कार्यशाला आयोजित करेगा। इसके लिए उन्होंने संबंधित विभागों के अध्यक्षों को विषय वस्तु तैयार करने के निर्देश भी दिए। इस अवसर पर डा. हरिहरन मुथुसामी, डा. जीएस बरार, डा. पवन कुमार राकेश, डा. स्मिता के साथ ही एनआइटी की अन्य फैकल्टी और शोध छात्र भी उपस्थित थे।

- भारत रत्न मौलाना अबुल कलाम आजाद की जयंती पर व्याख्यान माला का आयोजन
- निदेशक प्रो. ललित कुमार अवस्थी ने कहा, एनआइटी श्रीनगर संचालित करेगा गुरुकुल कार्यक्रम

एनआइटी उत्तराखंड श्रीनगर के सभागार में कार्यशाला को संबोधित करते निदेशक प्रो. ललित कुमार अवस्थी • जागरण

श्रीनगर में राष्ट्रीय शिक्षा दिवस मनाया गया

श्रीनगर, संवाददाता। एनआईटी उत्तराखंड श्रीनगर में शुक्रवार को भारत के प्रथम शिक्षा मंत्री, भारत रत्न मौलाना अबुल कलाम आज़ाद की जयंती के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय शिक्षा दिवस मनाया गया । इस अवसर पर संस्थान के इनोवेशन एंड एंटरप्रेन्योरशिप डेवलपमेंट सेल (आईईडीसी) द्वारा एक व्याख्यान का आयोजन किया गया। जिसमे संस्थान के निदेशक प्रो. ललित कुमार अवस्थी ने संकाय सदस्यों और शोध छात्रों को राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी -2020) की कुछ प्रमुख विशेषताओं से अवगत कराया।

प्रो. अवस्थी ने मौलाना आज़ाद को श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि मौलाना आजाद स्वतंत्र भारत की शिक्षा प्रणाली के प्रमुख वास्तुकार थे। उनके कार्यकाल के दौरान, देश में अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद (एआईसीटीई) और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) जैसे शीर्ष शिक्षा नियामक निकायो का गठन किया गया। प्रो. अवस्थी ने कहा कि संस्थान के स्टूडेंट वेलफेयर सेक्शन द्वारा ह्लगुरुकुलह्लह्ल कार्यक्रम चलाये जाने का भी लक्ष्य रखा गया है। जिसका उद्देश्य संस्थान के छात्रों द्वारा एनआईटी उत्तराखंड के आस-पास के वंचित छात्रों को शिक्षा प्रदान करना होगा।

राष्ट्रीय सहारा, रविवार, 13 नवम्बर 2022, Page No.0

मौलाना आजाद स्वतंत्र भारत की शिक्षा प्रणाली के प्रमुख वास्तुकार थे : प्रो अवस्थी

श्रीनगर/एसएनबी। राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईटी) उत्तराखंड में भारत के प्रथम शिक्षा मंत्री, भारत रत्न मौलाना अबुल कलाम आजाद की जयंती के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय शिक्षा दिवस मनाया गया। इस अवसर पर संस्थान के इनोवेशन एडं एंटरप्रेन्योरशिप डेवलपमेंट सेल (आईईडीसी) द्वारा विषय पर एक व्याख्यान का आयोजन किया गया।

इस मौके पर संस्थान के निदेशक प्रो. ललित कुमार अवस्थी ने संकाय सदस्यों और शोध छात्रों को राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी - 2020) की प्रमुख विशेषताओं से अवगत कराया। प्रो. अवस्थी ने मौलाना आजाद को श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि मौलाना आजाद स्वतंत्र भारत की शिक्षा प्रणाली के प्रमुख वास्तुकार थे। उनके कार्यकाल के दौरान देश में अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद (एआईसीटीई) और वि वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) जैसे शीर्ष शिक्षा नियामक निकायों का गठन किया गया। इसके अलावा देश में पहले आईआईटी स्कूल ऑफ प्लानिंग एंड आर्किटेक्चर कि स्थापना की गयी। प्रो. अवस्थी ने बताया एनईपी 2020 में छात्रों कि सुविधा के लिए एवं समग्र विकास के लिए बहु-विषयक शिक्षा, विषयों का लचीलापन, क्रेडिट का हस्तांतरण, अकादमिक बैंक का निर्माण, बहु-विषयक शिक्षा अनुसंधान वि वविद्यालय का गठन और उच्च शिक्षण संस्थानों का गहन अनुसंधान, गहन शिक्षण संस्थान के रूप में वर्गीकरण इत्यादि शामिल है। साथ ही प्रो. अवस्थी ने एनईपी के परदृश्य में राज्य उत्तराखंड में शिक्षा के स्तर को ऊपर उठाने में एनआईटी उत्तराखंड और इसके संकाय सदस्यों की भूमिका का भी उल्लेख किया। इस अवसर पर डा. हरिहरन मुथुसामी (डीन रिसर्च एंड कंसल्टेंसी), डा. जीएस बरार (डीन पी-डी), डा. पवन कुमार राकेश, डा. स्मिता कलोनी आदि मौजूद थे।

'छात्रों को स्कॉलरशिप देने में योगदान दें पूर्व छात्र'

संवाद न्यूज एजेंसी

एनआईटी उत्तराखंड में एलुमनी मीट का आयोजन

श्रीनगर। राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईटी) उत्तराखंड में संस्थान के एलुमनी अफेयर्स और छात्र कल्याण अनुभाग की ओर से शनिवार को चतुर्थ एलुमनी मीट आयोजित की गई।

संस्थान के निदेशक व मुख्य अतिथि प्रो. एलपी अवस्थी ने कहा कि इस सम्मेलन में पूर्व छात्र और शिक्षक लंबे समय बाद एक-दूसरे से मिल रहे हैं।

प्रो. अवस्थी ने सभी पूर्व छात्रों से कहा कि वे वर्तमान सामाजिक और औद्योगिक जरूरतों के अनुरूप कोर्स डिजाइन करें जिसे संस्थान के पाठ्यक्रम में शामिल किया जा सके और संस्थान में अध्ययनरत छात्रों को अत्याधुनिक तकनीकी ज्ञान दिया जा सके। इसके साथ ही उन्होंने आग्रह किया कि वे संस्थान के छात्रों को प्री प्लेसमेंट इंटर्नशिप ऑफर एवं परामर्श परियोजना आवंटित करने और आर्थिक रूप से कमजोर छात्रों के लिए स्कॉलरशिप देने में भी अपना योगदान दें।

प्रो. अवस्थी ने संस्थान के इतिहास में पहली बार बेस्ट फैकल्टी अवार्ड-2022 और डिस्टिंगुइश्ड एलुमनी अवार्ड-2022 की घोषणा की। इसमें बेस्ट फैकल्टी अवार्ड गणित विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. धर्मेंद्र त्रिपाठी व कंप्यूटर साइंस एंड इंजीनियरिंग विभाग के डॉ. कृष्ण कुमार को दिया गया।

डिस्टिंगुइश्ड एलुमनी अवार्ड-2022 इलेक्ट्रॉनिक्स एंड कम्युनिकेशन इंजीनियरिंग के छात्र सोमराज को दिया गया। इस मौके पर बतौर विशिष्ट अतिथि एनआईटी हमीरपुर की रसायन विभाग की अध्यक्ष डॉ. पमिता अवस्थी, डॉ. महीराज सिंह रावत (कोआर्डिनेटर एलुमनी अफेयर्स), डॉ. हरिहरन मुथुसामी (डीन रिसर्च एंड कंसल्टेंसी) डॉ. जीएस बरार (डीन पीएंडडी), डॉ. लालता प्रसाद (डीन अकादमिक) आदि सहित पुरातन छात्र व छात्राएं मौजूद थे।

ज्ञान के मध्य सेतु होते हैं पुरातन छात्र

श्रीनगर गढ़वाल: राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान उत्तराखंड श्रीनगर (एनआइटी) में एल्युमिनी मीट 2022 का शानदार आयोजन पूर्ण भव्यता गरिमा के साथ किया गया, जिसमें बड़ी संख्या में देश-विदेश की प्रतिष्ठित कंपनियों और उद्योग जगत में कार्य कर रहे एनआइटी के पुरातन छात्रों (एल्युमिनी) ने प्रतिभाग करते हुए अपने अनुभवों को भी साझा किया। एनआइटी हमीरपुर में रसायन विज्ञान विभाग की अध्यक्ष और समारोह की विशिष्ट अतिथि डा. पमिता के साथ मुख्य अतिथि एनआइटी उत्तराखंड के निदेशक प्रो. ललित कुमार अवस्थी ने दीप जलाकर एल्युमिनी मीट का उद्घाटन करते हुए कहा कि संस्थान में हुए परिवर्तनों और घटनाक्रमों में बदलावों को देखने के साथ ही पुरातन छात्र अपनी पुरानी यादें को भी इस समारोह के माध्यम से ताजा कर सकते हैं। किसी भी शैक्षणिक संस्थान की उन्नति में पुरातन छात्रों की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करते हुए प्रो. ललित अवस्थी ने पुरातन छात्रों से कहा कि घरेलू और अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्द्धा से अर्जित अनुभव और ज्ञान को वह संस्थान के छात्रों से साझा करें। एनआइटी निदेशक प्रो. ललित कुमार अवस्थी ने कहा कि औद्योगिक जरूरतों और शैक्षणिक संस्थान में उन्हें दिए गए ज्ञान के बीच पुरातन छात्र एक सेतु के रूप में काम करते हैं। (जासं)

हिन्दुस्तान, सोमवार, 14 नवम्बर 2022, Page No.07.

डॉ. धर्मेंद्र और डॉ. कृष्ण को मिला बेस्ट फैकल्टी अवार्ड

श्रीनगर, संवाददाता। एनआईटी उत्तराखंड श्रीनगर में संस्थान के एलुमनी अफेयर्स और छात्र कल्याण अनुभाग के संयुक्त तत्वावधान में शनिवार को चतुर्थ एलुमनी मीट आयोजित की गई।

संस्थान के निदेशक और मुख्य अतिथि प्रो.एलपी अवस्थी ने कहा कि इस सम्मेलन में पुरातन छात्र और शिक्षक लंबे समय बाद एक-दूसरे से मिलेंगे। वहीं पूर्व छात्रों को संस्थान में हुए परिवर्तनों और घटनाक्रमों में हुए बदलावों को देखने के साथ अपनी पुरानी यादों को भी ताज़ा करने का मौका मिलेगा और यही एलुमनी मीट का उद्देश्य भी है। अवस्थी ने संस्थान के इतिहास में पहली बार बेस्ट फैकल्टी अवार्ड-2022 और डिस्टिंगुइश्ड एलुमनी अवार्ड- 2022की घोषणा की। जिसमें बेस्ट फैकल्टी अवार्ड गणित विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. धर्मेंद्र त्रिपाठी व कंप्यूटर साइंस एंड इंजीनियरिंग विभाग के डॉ. कृष्ण को दिया गया। जबकि डिस्टिंगुइश्ड एलुमनी अवार्ड-2022 सोमराज को दिया गया।

राष्ट्रीय सहारा, मंगलवार, 15 नवम्बर 2022, Page No.04.

मातृ संस्था के उत्थान में योगदान दें पुरातन छात्र : प्रो अवस्थी

श्रीनगर/एसएनबी।

राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईटी) उत्तराखंड ने संस्थान के एलुमनी अफेयर्स और छात्र कल्याण अनुभाग के संयुक्त तत्वावधान में चतुर्थ एलुमनी मीट की मेजबानी की। एलुमनी मीट का शुभारंभ एनआईटी उत्तराखड के निदेशक प्रो. ललित कुमार अवस्थी ने किया।

सम्मलेन में आये पुरातन छात्रों का स्वागत करते हुए प्रो. अवस्थी ने कहा की उनका मानना है कि किसी भी शैक्षणिक संस्थान का उत्थान केवल संस्था में रह रहे छात्रों पर ही निर्भर नहीं करता,बल्कि यह सामूहिक रूप से संस्थागत छात्रों और पुरातन छात्रों दोनों पर निर्भर करता है।

प्रो. अवस्थी ने पुरातन छात्रों को विशेषज्ञ व्याख्यान देने, उद्योग-उन्मुख समस्याओं को हल करने में युवा स्नातकों का मार्गदर्शन करने, संकाय सदस्यों के साथ संयुक्त परियोजनाओं को लिखने के लिए भी आमंत्रित किया। उन्होंने कहा की पुरातन छात्र औद्योगिक आवश्यकता और शैक्षणिक संस्थान में दिए गए ज्ञान के बीच एक सेतु के रूप में काम कर सकते हैं।

एलुमनी मीट के अवसर पर प्रो. अवस्थी ने संस्थान के इतिहास में पहली बार बेस्ट फैकल्टी अवार्ड-2022 और डिस्टिंगुइश्ड एलुमनी अवार्ड-2022 की घोषणा की। जिसमे बेस्ट फैकल्टी अवार्ड गणित विभाग के असोसिएट प्रोफेसर डा. धर्मेंद्र त्रिपाठी, कंप्यूटर साइंस एंड इंजीनियरिंग विभाग के डा. कृष्ण कुमार को दिया गया और डिस्टिंगुइश्ड एलुमनी अवार्ड-2022 इलेक्ट्रॉनिक्स एंड कम्युनिकेशन इंजीनियरिंग के छात्र सोमराज को दिया गया।

इस मौके पर एलुमनी अफेयर्स के कोऑर्डिनेटर डा. महीराज सिंह रावत, डा. हरिहरन मुथुसामी, डा. जीएस बरार, डा. लालता प्रसाद आदि थे।

सबसे तेज प्रधान टाइम्स

राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान में उत्पादकता वृद्धि- योग और ध्यान के माध्यम से किया गया फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम का आयोजन

गबर सिंह भण्डारी

हरिद्वार/पौड़ी/श्रीनगर गढ़वाल (सबसे तेज प्रधान टाइम्स)। राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान में उत्पादकता वृद्धि-योग और ध्यान के माध्यम से विषय पर 07 नवंबर से 18 नवंबर, 2022 तक एक फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम का आयोजन किया जा रहा है। एआईसीटीई ट्रेनिंग एंड लर्निंग एकडेमी (अटल) द्वारा प्रायोजित इस कार्यक्रम का संचालन ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों माध्यम से किया जा रहा है। ऑफलाइन माध्यम में संचालित किये जा रहे कार्यक्रम का उद्घाटन 14 नवंबर को किया गया जिसमे संस्थान के माननीय निदेशक प्रोफेसर ललित कुमार अवस्थी मुख्य अतिथि और आर्ट ऑफ़ लिविंग के श्री वरुण उपाध्याय, आर्ट ऑफ़ लिविंग , क्षेत्रीय निदेशक युवा विकास, सुश्री पॉलोमी मुखर्जी,आर्ट ऑफ़ लिविंग क्षेत्रीय निदेशक सरकारी कार्यक्रम और आर्ट ऑफ़ लिविंग के श्री प्रभशरण जी विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। कार्यक्रम के उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता करते हुए प्रोफेसर अवस्थी ने प्रतिभागिओ से पूछा कि किसी संस्थान की उत्पादकता बढ़ाने के लिए बुनियादी घटक क्या हैं? भिन्न -भिन्न संकाय सदस्यों सामूहिक और सही दिशा में किया गया प्रयास, समय प्रबंधन, स्वस्थ और तनाव मुक्त माहौल जैसे कई उत्तर दिए। इस पर प्रोफेसर अवस्थी ने कहा कि इन सबके बावजूद जो सबसे पहला महत्वपूर्ण कारक है वह है सकारात्मक दृष्टिकोण और दूसरा है देने कि क्षमता और सामर्थ्य। उन्होंने कहा कि यदि हम सही सोच, सकारात्मक दृष्टिकोण और विकार रहित मन और मस्तिष्क से कार्य करेंगे तो ही हम अपने समाज, अपने संस्थान और अपने देश के विकास में अपना संपूर्ण योगदान दे सकते है। उन्होंने प्रतिभागियों को सीख देते हुए कहा यदि किसी के मन में कोई दुराग्रह हो तो उसे त्यागना ही बेहतर होता अन्यथा उसका स्वयं का मन अशांत रहेगा और किसी भी कार्य में वह अपना शतप्रतिशत योगदान नहीं दे पायेगा। प्रोफेसर अवस्थी ने आगे कहा कि किसी भी व्यक्ति कि दशा और दिशा में उसके कर्मों कि भूमिका महत्वपूर्ण होती है अत: हमें अपने जीवन में सदैव अच्छे कर्म और उच्च मानवीय मूल्यों का समावेश करना चाहिए। उन्होंने आगे कहा कि इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य यही है कि योग और ध्यान के माध्यम से व्यक्ति कि सकारात्मक सोच को प्रखर करना जिससे कि वे शारीरिक और मानसिक रूप से मजबूत हो सकें। साथ ही वे समाज ,कार्यस्थल और देश के प्रति अपने उत्तरदायित्वों का भली भांति निर्वहन करते हुए भारत को एक गौरवशाली और समृद्धशाली राष्ट्र बनाने में मदद कर सकें। कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए आर्ट ऑफ़ लिविंग संगठन के श्री वरुण उपाध्याय जी , सुश्री पॉलोमी मुखर्जी और श्री प्रभशरण जी योग और ध्यान के महत्व के बारे में बताया साथ कार्यक्रम के दौरान किये जाने वाले क्रियाकलापों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया। इस अवसर पर डॉ लालता प्रसाद(डीन अकादमिक), डॉ जी एस बरार (डीन पी एंड डी), डॉ राकेश कुमार मिश्रा (एसोसिएट डीन स्टूडेंट वेलफेयर) के आलावा संस्थान के एसोसिएट डीन , विभागाध्यक्ष, संकाय सदस्यो और शोध छात्रों ने प्रतिभाग किया।

एनआईटी के एक छात्रावास का निर्माण पूरा

श्रीनगर। राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईटी) उत्तराखंड के श्रीनगर कैंपस में आधुनिक सुविधाओं से युक्त तीन छात्रावासों का निर्माण अंतिम चरण में है जबकि एक छात्रावास का निर्माण पूरा होने पर कार्यदायी एजेंसी ने एनआईटी को सौंप दिया है। संस्थान के निदेशक प्रो. ललित कुमार अवस्थी ने बताया कि वर्तमान में संस्थान के परिसर में कुल आठ छात्रावास हैं। इनमें सात छात्रावास पॉलीटेक्निक परिसर और एक छात्रावास रेशम फार्म के निर्माणाधीन परिसर में स्थित है। उन्होंने बताया कि रेशम फार्म में चार छात्रावासों का निर्माण कार्य चल रहा था जिसमें से एक का निर्माण पूरा हो चुका है। शेष तीन का निर्माण कार्य भी पूरा हो जाएगा। निदेशक ने बताया कि नव निर्मित अलकनंदा छात्रावास में पहली प्राथमिकता तृतीय और चतुर्थ वर्ष के छात्रों को दी जाएगी। छात्रावासों का नामकरण भी उत्तराखंड की नदी गंगा, यमुना, मंदाकिनी, सरस्वती, भागीरथी, भिलंगना और पिंडर के नाम पर किया गया है। संवाद

छात्रों को मिलने लगी अत्याधुनिक हास्टल की सुविधा

जागरण संवाददाता, श्रीनगर गढ़वाल : राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान उत्तराखंड श्रीनगर (एनआइटी) के श्रीनगर परिसर में अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त छात्रावासों की सुविधा छात्रों को उपलब्ध होने लगी है। 120 बैड क्षमता अलकनंदा छात्रावास बीटेक तृतीय वर्ष और चतुर्थ वर्ष के छात्रों को आवंटित कर दिया गया है जबकि तीन छात्रावासों पर कार्य प्रगति पर है।

एनआइटी उत्तराखंड श्रीनगर के निदेशक प्रो. ललित कुमार अवस्थी ने कहा कि संस्थान के छात्र-छात्राओं को आधुनिक सुविधाओं से लैस छात्रावास उपलब्ध कराना उनकी पहली प्राथमिकता है। जिसके प्रथम चरण में 23 करोड़ रुपये की लागत से छात्रावासों का निर्माण कार्य किया जा रहा है। निर्माणदायी संस्था को निर्देश दिए गए हैं कि शेष तीनों हास्टलों का निर्माण कार्य भी एक महीने के अंदर पूर्ण किया जाए। कहा कि एनआइटी के श्रीनगर कैंपस में पुराने रेशम फार्म वाली भूमि पर छात्रावासों का निर्माण कार्य हुआ है। अवस्थी ने कहा कि पहाड़ की नदियों की स्वच्छता और संरक्षण के प्रति एनआइटी की प्रतिबद्धता प्रदर्शित करते हुए छात्रावासों का नाम उत्तराखंड की नदियों के नाम पर किया गया है। एनआइटी उत्तराखंड श्रीनगर के चीफ हास्टल वार्डन डा. आइएम नागपुरे ने इस अवसर पर कहा कि संस्थान के लगभग 500 छात्र-छात्राओं के लिए छात्रावास सुविधा उपलब्ध है। सभी छात्रावासों के कुशल संचालन और प्रबंधन को लेकर नए हास्टल वार्डन भी नियुक्त किए गए हैं। डा. आइएम नागपुरे ने कहा कि डा. कुसुम शर्मा और डा. सरिता यादव को गर्ल्स हास्टल का वार्डन और डा. मारुति देशमुख, डा. डी. श्रीहरि, डा. दीपक कुमार को ब्वायज हास्टल के वार्डन की जिम्मेदारी दी गई है।

एनआइटी उत्तराखंड श्रीनगर में नवनिर्मित अलकनंदा हास्टल।

40 करोड़ से होंगे दूसरे चरण के कार्य

एनआइटी श्रीनगर कैंपस में सुविधाएं बढ़ाने को लेकर द्वितीय चरण में लगभग 40 करोड़ रुपये से निर्माण कार्य किए जाने हैं जिसके लिए निर्माणदायी संस्था द्वारा शीघ्र ही टेंडर भी जारी किए जाएंगे। निदेशक प्रो. ललित अवस्थी ने बताया कि द्वितीय चरण में श्रीनगर परिसर में वलासरूम, आडिटोरियम के साथ ही निदेशक और संकाय अध्यक्षों के कार्यालय, लाइब्रेरी आदि के निर्माण होने हैं।

सबसे तेज प्रधान टाइम्स

प्रौद्योगिकी संस्थान के श्रीनगर कैंपस में आधुनिक सुविधाओं से युक्त अलकनंदा छात्रावास का हुआ शुभारम्भ

गबर सिंह भण्डारी

हरिद्वार/पौड़ी /श्रीनगर गढ़वाल (सबसे तेज प्रधान टाइम्स)। प्रौद्योगिकी संस्थान राष्ट्रीय उत्तराखंड श्रीनगर में संस्थान के अलकनंदा छात्रावास का शुभारंभ किया गया माननीय निदेशक प्रफेसर ललित कुमार अवस्थी ने बताया कि वर्तमान समय में संस्थान के श्रीनगर स्थित परिसर में कुल आठ छात्रावास है जिसमे से सात छात्रवास पॉलिटेक्निक परिसर में और एक छात्रावास रेशम फार्म के निर्माणाधीन परिसर में स्थित है। उन्होंने बताया कि रेशम फार्म में चार छात्रावासो का निर्माण कार्य चल रहा था जिसमे से एक हॉस्टल का निर्माण कार्य पूरा होने के बाद कार्य दायी संस्था ने हाल ही में उसे एन आई टी प्रशासन को सौप दिया है, शेष तीन छात्रावासों का निर्माण कार्य भी शीघ्र ही पूरा हो जायेगा। प्रोफेसर अवस्थी ने कहा की संस्थान में छात्रों को आधुनिक सुविधा युक्त छात्रावास मुहैया कराना उनकी पहली प्राथमिकता है जिसे काफी हद तक पूरा कर लिया गया है। इसके अलावा संस्थान में अध्ययनरत तृतीय और चतुर्थ वर्ष के छात्रों को नवनिर्मित अलकनंदा छात्रावास में स्थानांतरित कर दिया गया है। यह छात्रावास एन आई टी के श्रीनगर कैंपस (रेशम फार्म) में निर्माणाधीन छात्रावास समूह का एक हिस्सा है। उन्होंने आगे कहा कि नवनिर्मित छात्रावासों में छात्रों कि बुनियादी आवश्यकताओं का ध्यान रखते हुए उच्च गुणवत्ता की सभी सुविधाएं प्रदान की जा रही है। छात्रावासों के नामकरण पर पूछे गए एक प्रश्न का उत्तर देते हुए प्रोफेसर अवस्थी ने कहा कि प्राचीन काल से ही देश में नदियों का विशेष पौराणिक, आर्थिक, धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व रहा है। हमारे ऋषि-मुनि भी नदियों के किनारे एकांत में बैठकर सालों तक तपस्या करते थे। आज भी हम कई उत्सव और त्यौहार जीवनदायिनी नदियों के साथ मनाते हैं। यदि हम उत्तराखंड राज्य के सन्दर्भ में बात करें तो यहाँ छोटे बड़े कई नदी-तंत्र हैं, जिनमें से गंगा तंत्र, यमुना तंत्र तथा काली तंत्र मुख्य है। इसीलिए संस्थान ने नदियों के स्वच्छता और संरक्षण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता प्रदर्शित करते हुए छात्रावासों का नामकरण उत्तराखंड राज्य की नदियों के नाम पर किया है। उन्होंने जानकारी दी की छात्रावास संख्या एक से लेकर सात तक के नाम क्रमशः गंगा , यमुना , मन्दाकिनी , सरस्वती, भागीरथी , भिलंगना और पिंडर रखा गया है तथा नवनिर्मित छात्रावास का नाम अलकनंदा रखा गया है। संस्थान के मुख्य वार्डन डॉ आई एम् नागपुरे ने बताया की वर्तमान में लगभग 500 छात्र एवं छात्राये संस्थान के पॉलिटेक्निक और रेशम फार्म स्थित छात्रावासों में रह रहे है। उन्होंने कहा कि छात्रावासों के नामकरण के साथ -साथ माननीय निदेशक प्रोफेसर ललित कुमार अवस्थी के निर्देशनुसार नए वार्डन्स की भी नियुक्ति की गयी है जिससे छात्रावासों के सफलतापूर्वक संचालन एवं प्रबंधन के साथ संस्थान में रह रहे छात्रों की सुख सुविधा पर समुचित रूप से ध्यान दिया जा सके। उन्होंने कहा कि इस कार्य के लिए डॉ कुसुम शर्मा डॉ और सरिता यादव को गर्ल्स हॉस्टल और डॉ एम् एस खत्री, डॉ डी बी सिंह, डॉ अमरदीप, डॉ मारुति देशमुख, डॉ डी श्रीहरि, और डॉ दीपक कुमार को बॉयज हॉस्टल की जिम्मेदारी सौपी गयी है।

धीरज सिंह नेगी अध्यक्ष

सबसे तेज प्रधान टाइम्स

राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान श्रीनगर मे संविधान दिवस मनाया गया

गबर सिंह भण्डारी

हरिद्वार/श्रीनगर गढ़वाल (सबसे तेज प्रधान टाइम्स)। राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान श्रीनगर उत्तराखण्ड में संविधान दिवस कार्यक्रम का उद्घाटन संस्थान के पॉलिटेक्निक कैंपस में स्थित सभागार में पारम्परिक रूप से दीप प्रज्वलन के साथ किया गया जिसमे प्रोफेसर ललित कुमार अवस्थी, माननीय निदेशक, एनआईटी उत्तराखंड बतौर मुख्य अतिथि और प्रोफेसर विनी कपूर मेहता, संस्थापक वाईस चांसलर, डॉ. बी. आर. अम्बेडकर राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय, सोनीपत, हरियाणा विशिष्ट अतिथि के रूप में मौजूद थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रोफेसर अवस्थी ने कहा कि आज का दिन 26/11 हमारे लिए एक दुखद दिन भी है जब देश के दुश्मनों ने मुंबई में जघन्य आतंकी हमला किया था। और तब हमारे कई बहादुर सैनिकों ने संविधान में परिभाषित देश के आम आदमी की रक्षा के लिए उन आतंकवादियों से लड़ते अपने प्राणो की आहुति दे दी थी। आज इस मंच पर खड़े होकर मैं इस आतंकी हमले में जान गंवाने वाले जवानों, पुलिसकर्मियों और महिला-पुरूषों को श्रद्धांजलि देता हूं। साथ ही मैं अपने देश भारत और दुनिया के किसी भी अन्य देश पर किसी भी आतंकवादी हमले की कड़ी निंदा करता हूं।उन्होंने कहा की वर्तमान समय में आतंकवाद भारतीय विकास को बाधित करने में एक महत्वपूर्ण कारक है। और सभी लोगो का आह्वहन किया की आज के दिन हम सभी लोगो को आतंरिक या बाह्य, सभी प्रकार केआतंक के विरूध एकसाथ खड़े होने और इस समूल नष्ट करने का भी संकल्प लेना चाहिए। प्रोफेसर अवस्थी ने आगे कहा की 73 वर्ष पूर्व आज ही के दिन 1949 में संविधान सभा ने भारतीय गणतंत्र को एक उदार संवैधानिक लोकतंत्र के रूप में चलाने के लिए संविधान को अपनाया था। इसलिए आज का दिन डॉ. राजेंद्र प्रसाद और डॉ भीमराव अंबेडकर जैसे दूरदर्शी महापुरुषों और भारत के विद्वानों श्रद्धांजलि देने का है जिन्होंने देश के उज्जवल भविष्य की नींव तैयार करने के लिए वर्षो तक अथक प्रयास किया। आज का दिन स्वतंत्रता संग्राम में अनगिनत देशभक्तों द्वारा दिए गए बलिदानों को याद करने और उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करने का है जिन्होंने भारत को औपनिवेशिक बंधनों से मुक्त कराने के लिए अपने प्राण न्योछावर कर दिए। तत्पश्चात प्रोफेसर अवस्थी ने संविधान के सभा के निर्माण और इसके अस्तित्व में आने की जानकारी देते हुए श्रोताओ को बताया की भारतीय संविधान मूलतः अंग्रेजी और हिंदी दिनों भाषाओ में हस्तलिखित है और सुलेखित है। यह दुनिया का सबसे लंबा और सबसे व्यापक संविधान है। इसके आरंभ के समय इसमें 395 अनुच्छेद, 22 भाग और 8 अनुसूचियां थीं। अब तक इसमें 105 संशोधन जोड़े गए हैं और वर्तमान समय में भारत के संविधान में 448 अनुच्छेद 25 भाग और 12 अनुसूचियां हैं।उन्होंने संविधान कि मुख्या विशेषताओं का जिक्र करते हुए कहा कि 1949 में जब संविधान को अपनाया गया था, तब नागरिकों के मौलिक कर्तव्यों के संबंध में कोई प्रावधान नहीं थे, हालांकि मौलिक अधिकारों का प्रावधान था। मौलिक कर्तव्यों को 1976 में 42वें संशोधन द्वारा संविधान में जोड़ा गया है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि व्यक्ति अपने मौलिक अधिकारों का प्रयोग करते समय अपने कर्तव्यों की अनदेखी न करे। वर्तमान में संविधान के अनुच्छेद 51-ए में कुल ग्यारह कर्तव्य सूचीबद्ध हैं जिनका उद्देश्य लोकतांत्रिक आचरण की याद दिलाना, असामाजिक गतिविधियों के खिलाफ चेतावनी, अनुशासन और प्रतिबद्धता की भावना को याद दिलाना और कानून की संवैधानिकता निर्धारित करने में मदद करना है। उन्होंने बताया कि इन मौलिक कर्तव्यों को भारतीय परंपरा, पौराणिक कथाओं, धर्मों और प्रथाओं के अनुसार तैयार किया गया है। प्रोफेसर अवस्थी ने आगे कहा आज के समय में मौलिक अधिकारों के बारे में बात करना एक आम बात है। लेकिन मेरा ध्यान मौलिक कर्तव्यों पर है। मेरी राय में मौलिक अधिकार और मौलिक कर्तव्य एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। इसलिए, हम सभी को यह संकल्प लेना चाहिए कि हम अपने अधिकारों की मांग करने से पहले, हम सभी अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन करेंगे और अपने महान देश भारत की प्रगति और समृद्धि के लिए योगदान देंगे। उन्होंने संस्थान के संकाय सदस्यों से कहा कि हमारी आने वाली पीढ़ी को न केवल मौलिक अधिकारों बल्कि कर्तव्यों और जिम्मेदारियों के बारे में भी शिक्षित करने की आवश्यकता है ताकि वे भविष्य में भारत के जिम्मेदार नागरिक और नेता बन सकें।साथ ही उपस्थित जनसमूह को भारतीय संविधान की उद्देशिका का सामूहिक पाठ कराया और सभी को भारतीय संविधान प्रति अपनी आस्था, प्रतिज्ञा, एकता के संकल्प उद्देशिका शपथ के माध्यम से दोहराया। अंत में प्रोफेसर अवस्थी ने सभी को ꖺसंविधान दिवसꖺ कि बधाई दी और कामना की कि हमारा देश प्रगति करे और हर देशवासी गरिमा और ईमानदारी के साथ अपना कर्तव्य निभाए।समारोह को सम्बोधित करते हुए मुख्य वक्ता डॉ विनि कपूर मेहता ने संविधान के निर्माण की परिकल्पना से लेकर उसके मूर्त रूप लेने और लागू होने तक का जिक्र किया और संविधान मूल भावना और उसकी मुख्य विशेषताओं से श्रोताओ को अवगत कराया। संविधान में हुए विभिन्न संशोधन का जिक्र करते हुए कहा की ये सभी संशोधन इसलिए जोड़े गए क्योकि कालांतर में भौतिकतावादी और भूमंडलीकरण की विचारधारा के कारन आम जनमानस की सोच बदलने लगी, लोग अपनी जिम्मेदारिओं से विमुख होने लगे और समाज में दहेज प्रथा, महिला हिंसा, नशाखोरी आदि जैसी कई कुरीतिया फैलने लगी। लोगो ने अपना विरोध व्यक्त करने के लिए सरकारी सम्पत्तियो को नुकसान पहुंचना शुरू कर दिया और उच्च संवैधानिक पदों पर बैठे लोगो का अपमान करने लगे। इसीलिए इन सब घटनाओ पर अंकुश लगाने के लिए संविधान में आवश्यक संशोधन किये गए। उन्होंने उपस्थित सभी लोगो से आग्रह किया की आज के दिन ये संकल्प ले की सरकारी सम्पत्तियो नुकसान नहीं करेंगे, सांस्कृतिक और राष्ट्रीय धरोहरों जैसे स्मारक, मंदिर या संग्रहालय इत्यादि की दीवारों पर कुछ लिखेंगे नहीं और संविधान की मूल भावना और उसकी गरिमा का सम्मान करेंगे।इस अवसर पर डॉ हरिहरन मुथुसामी (डीन रिसर्च एंड कंसल्टेंसी), डॉ जी एस बरार (डीन पी एंड डी), डॉ लालता प्रसाद (डीन अकादमिक) डॉ राकेश कुमार (एसोसिएट डीन, स्टूडेंट वेलफेयर)के अलावा विभागध्यक्ष एवं अन्य संकाय सदस्य और कर्मचारी गण उपस्थित थे।